# INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

IRJMSH

**ISSN 2277 – 9809 (online)**
**ISSN 2348 - 9359 (Print)**

*An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal*

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

# अपराध प्रतिरूप का ग्रामीण जीवन पर प्रभाव (राजस्थान के सिरोही जिले के संदर्भ में)


## जितेन्द्र कुमार कलबी

शोधार्थी, भुगोल विभाग, माधव विश्वविधालय, राजस्थान

jitendrakalbi0@gmail.com

## डॉ. देवेन्द्र मुझाल्दा

आचार्य, भुगोल विभाग, माधव विश्वविधालय, राजस्थान

devendramuzalda@gmail.com



## सारांश

इस अध्ययन का उद्देश्य राजस्थान के सिरोही जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में अपराध प्रतिरूप तथा उसका ग्रामीण जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव जिसमें सामाजिक आर्थिक एवं दैनिक जीवन संबंधी प्रभावों का भौगोलिक अध्ययन करना है इस अध्ययन में केवल प्राथमिक आंकड़ों आंकड़ों का उपयोग किया गया है यह प्राथमिक आंकड़े कहां संकलन प्रायिकतामूलक याद्दच्छिक नमूना चयन पद्धति का प्रयोग करते हुए उत्तरदाताओं का चयन किया गया है जिसमें संरक्षित प्रश्नावली के माध्यम से प्रत्यक्ष क्षेत्रीय सर्वेक्षण द्वारा आंकड़े एकत्रित किए गए हैं ।

अध्ययन क्षेत्र में उत्तरदाताओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखकर उनका ग्रामीण जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव को का अध्ययन किया गया तथा प्राप्त परिणामों के अनुसार नमूने में कई उत्तरदाता कृषि पशुपालन से जुड़े हुए हैं साथ ही साथ अपराधों में नशे से संबंधित अपराध सबसे अधिक पाए गए हैं जिनकी भूमि /संपत्ति विवाद तथा चोरी का प्रतिशत भी अधिक रहा है इन अपराधों का प्रभाव में ग्रामीण विकास प्रभावित होने की प्रतिक्रिया भी सर्वाधिक रही है इसके बाद दैनिक जीवन प्रभावित होने की प्रक्रिया प्रतिक्रिया भी सामने आई है ।

इस प्रकार अध्ययन से पता चलता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में केवल कानून व्यवस्था की समस्या नहीं नहीं है बल्कि अपराध का संबंध ग्रामीण आजीविका, सामाजिक संबंधों एवं महिला सुरक्षा की भावना तथा विकास की प्रक्रिया से भी है


**प्रमुख शब्द:** अपराध प्रतिरूप, ग्रामीण जीवन, अपराध भूगोल, ग्रामीण सुरक्षा, ग्रामीण विकास, सिरोही, प्राथमिक आँकड़े।

## प्रस्तावना

अपराध समाज की एक महत्वपूर्ण सामाजिक समस्या है, जिसका प्रभाव व्यक्ति तथा परिवार से लेकर पूरे समुदाय तक दिखाई दे रहा है। अपराध का अध्ययन केवल अपराधों की संख्या अथवा उनके कानूनी स्वरूप तक सीमित नहीं है ब्लकि इसे भूगोल के दृष्टिकोण से अपराध का अध्ययन इस बात को समझने का प्रयास करता है कि अपराध किस प्रकार स्थान, समाज, आर्थिक परिस्थितियों तथा मानवीय गतिविधियों से संबंधित है।

ग्रामीण क्षेत्रों की सामाजिक संरचना शहरी क्षेत्रों से अलग होती है। यहाँ कृषि, पशुपालन, मजदूरी, स्थानीय व्यापार तथा सामुदायिक संबंध ग्रामीण जीवन के प्रमुख आधार हैं। ऐसी स्थिति में चोरी, मारपीट, घरेलू हिंसा, भूमि एवं संपत्ति विवाद, नशे से संबंधित अपराध तथा ग्रामीण जीवन को विभिन्न स्तरों पर प्रभावित कर सकते हैं।

अपराध का प्रभाव केवल पीड़ित व्यक्ति तक सीमित नहीं रहता। किसी अपराध की घटना से परिवार को आर्थिक नुकसान हो सकता है, सामाजिक संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता है तथा ग्रामीणों में भय एवं असुरक्षा की भावना बढ़ सकती है। इसके अतिरिक्त महिलाओं की आवाजाही, बच्चों की गतिविधियों तथा कृषि एवं पशुपालन जैसी आर्थिक गतिविधियों पर भी इसका अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ सकता है।

सिरोही जिले के ग्रामीण क्षेत्रों का अध्ययन इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि यहाँ ग्रामीण जीवन में कृषि एवं पशुपालन की महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रस्तुत अध्ययन में ग्रामीणों के प्रत्यक्ष अनुभवों एवं धारणाओं के आधार पर अपराध प्रतिरूप और उसके ग्रामीण जीवन पर प्रभाव को समझने का प्रयास किया गया है।

## साहित्य अवलोकन

अपराध का भौगोलिक अध्ययन विश्व स्तर पर 1970 के दशक से आरम्भ हुआ। भारत में भी स्थानिक दृष्टिकोण से अपराध के अध्ययन की प्रव्रति धीरे-धीरे प्रगति हुई है। **दत्त एवं अन्य (2012**) ने किताब में भारत में प्रचलित अपराधों का अध्ययन कर प्राप्त को सामाजिक समस्या के साथ-साथ स्थान पर्यावरण तथा मानव की गतिविधियों से जुड़ा हुआ बताया है ।

**कबिराज (2023**) ने अपनी शोध पत्र में यह बताया है कि अपराध स्थान एवं समय के अनुसार पाया जाता है और विभिन्न अपराधों में स्थानिक गुच्छा दिखाई पड़ता है तथा पड़ोसी क्षेत्र भी अपराध की दर को प्रभावित करते हैं ।

**डोनरमेयर (2016**) ने अपनी किताब में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में होने वाले अपराध की प्रकृति का अध्ययन किया जिसमें ग्रामीण क्षेत्र में भूमि विवाद नशे से संबंधित चोरी एवं घरेलू हिंसा को अपराध में प्रमुख माना है ।

**सिंह (2023)** ने अपने शोध में राजस्थान के करौली एवं धौलपुर जिलों में अपराध को भूगोल एवं भू आकृति से जोड़कर देखा है तो इन दुर्गम भूभाग, जनसंख्या घनत्व और आर्थिक स्थिति अपराध दर को प्रभावित करते हैं जिससे यह पता चलता है कि अपराध प्रतिरूप को भौगोलिक स्थितियां प्रभावित करती है ।

## अध्ययन के उद्देश्य

1. सिरोही जिले के चयनित ग्रामीण क्षेत्रों में प्रमुख अपराधों के प्रतिरूप का अध्ययन करना।
2. अपराधों के कारण ग्रामीणों में उत्पन्न सामाजिक एवं आर्थिक प्रभावों का अध्ययन करना।

## परिकल्पना

इस अध्ययन में कोई पूर्वनिर्धारित परिकल्पना निर्धारित नहीं की गई है। अध्ययन क्षेत्र प्राथमिक सर्वेक्षण से प्राप्त आँकड़ों के वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक परीक्षण पर आधारित है।

## अध्ययन क्षेत्र

यह अध्ययन राजस्थान के सिरोही जिले के ग्रामीण क्षेत्रों से सम्बधित है जिसमे निवास करने वाले व्यक्तियों से प्राथमिक जानकारी प्राप्त की गई। अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण आबादी की आजीविका में कृषि, पशुपालन एवं मजदूरी का महत्वपूर्ण स्थान है। अतः अपराधों के कारण इन गतिविधियों में उत्पन्न होने वाले परिवर्तन को अध्ययन में विशेष महत्व दिया गया है।

## शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। अध्ययन का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में अपराध प्रतिरूप तथा उसके ग्रामीण जीवन पर प्रभाव का अध्ययन करना है।

## प्राथमिक आँकड़े

अध्ययन में केवल प्राथमिक आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आँकड़े क्षेत्रीय सर्वेक्षण के माध्यम से सीधे उत्तरदाताओं से प्राप्त किए गए।

### नमूना चयन

अध्ययन में प्रायिकतामूलक याद्दच्छिक नमूना चयन पद्धति का प्रयोग किया गया। कुल 100 उत्तरदाताओं का चयन किया गया।

नमूना चयन में विभिन्न ग्रामीण सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों को शामिल करने का प्रयास किया गया, ताकि चयनित नमूना से अध्ययन क्षेत्र की ग्रामीण विविधता को दिखा सके।

### आँकड़ों का संकलन

आँकड़ों के संकलन के लिए संरचित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। प्रश्नावली में उत्तरदाताओं की आयु, शिक्षा, व्यवसाय, प्रमुख अपराध, आर्थिक नुकसान, सामाजिक प्रभाव, भय एवं असुरक्षा, महिलाओं एवं बच्चों की गतिविधियों तथा ग्रामीण विकास पर प्रभाव से संबंधित प्रश्न शामिल किए गए।

### आँकड़ों का विश्लेषण

प्राप्त आँकड़ों को संपादन, कोडिंग, वर्गीकरण एवं सारणीकरण के बाद आवृत्ति एवं प्रतिशत के माध्यम से विश्लेषन कर किये जाने का प्रयास किया गया है ।

जहाँ उत्तरदाता को एक से अधिक विकल्प चुनने की अनुमति थी, वहाँ Multiple Response Analysis का प्रयोग किया गया। इसलिए ऐसी तालिकाओं में प्रतिक्रियाओं का कुल प्रतिशत 100 प्रतिशत होना आवश्यक नहीं है।

## सामाजिक-आर्थिक स्थिति

अध्ययन में कुल 100 उत्तरदाताओं को शामिल किया गया। आयु संरचना में 18–30 वर्ष आयु वर्ग के उत्तरदाताओं की संख्या सर्वाधिक 39 प्रतिशत है। इसके बाद 31–45 वर्ष के 31 प्रतिशत, 46–60 वर्ष के 21 प्रतिशत तथा 61 वर्ष से अधिक आयु के 9 प्रतिशत उत्तरदाता हैं।

शैक्षणिक स्थिति के अनुसार 38 प्रतिशत उत्तरदाता निरक्षर हैं। 48 प्रतिशत उत्तरदाता प्राथमिक, माध्यमिक अथवा उच्च माध्यमिक स्तर तक शिक्षित हैं, जबकि 14 प्रतिशत स्नातक एवं उससे अधिक शिक्षा प्राप्त हैं।

व्यवसाय की दृष्टि से कृषि/पशुपालन प्रमुख है। कुल 62 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि एवं पशुपालन से जुड़े हैं, जबकि 34 प्रतिशत मजदूरी करते हैं।

**तालिका 1.1 उत्तरदाताओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति**

| सामाजिक-आर्थिक चर | उत्तरदाताओं की संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|
| **आयु वर्ग** | | |
| 18–30 वर्ष | 39 | 39% |
| 31–45 वर्ष | 31 | 31% |
| 46–60 वर्ष | 21 | 21% |
| 61 वर्ष से अधिक | 9 | 9% |
| **कुल** | **100** | **100%** |
| **शैक्षणिक योग्यता** | | |
| निरक्षर | 38 | 38% |
| प्राथमिक/माध्यमिक/उच्च माध्यमिक | 48 | 48% |
| स्नातक एवं अधिक | 14 | 14% |
| **कुल** | **100** | **100%** |
| **मुख्य व्यवसाय** | | |
| कृषि/पशुपालन | 62 | 62% |
| मजदूरी | 34 | 34% |
| व्यवसाय/नौकरी | 2 | 2% |
| अन्य | 2 | 2% |
| **कुल** | **100** | **100%** |

*स्रोत: क्षेत्रीय प्राथमिक* आँकड़ों के आधार पर

## ग्रामीण क्षेत्रों में प्रमुख अपराधों का प्रतिरूप

प्राथमिक सर्वेक्षण में ग्रामीणों से उनके क्षेत्र में दिखाई देने वाले प्रमुख अपराधों के संबंध में जानकारी प्राप्त की गई। प्राप्त प्रतिक्रियाओं में नशे से संबंधित अपराध सबसे अधिक रहे। इसके बाद भूमि/संपत्ति विवाद तथा चोरी का स्थान रहा।

नशे से संबंधित अपराधों की 5 प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुईं, जो कुल 17 अपराध संबंधी प्रतिक्रियाओं का 29.41 प्रतिशत हैं। भूमि/संपत्ति विवाद 23.53 प्रतिशत तथा चोरी 17.65 प्रतिशत रहे।

**तालिका 1.2 ग्रामीण क्षेत्रों में प्रमुख अपराधों का प्रतिरूप**

| अपराध का प्रकार | उत्तरदाताओं की संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|
| चोरी | 3 | 17.65% |
| मारपीट/हिंसा | 2 | 11.76% |

| | | |
|---|---|---|
| घरेलू हिंसा | 1 | 5.88% |
| भूमि/संपत्ति विवाद | 4 | 23.53% |
| नशे से संबंधित अपराध | 5 | 29.41% |
| साइबर अपराध/ऑनलाइन ठगी | 1 | 5.88% |
| अन्य | 1 | 5.88% |
| **कुल** | **17** | **100%** |

*स्रोत: क्षेत्रीय प्राथमिक* आँकड़ों के आधार पर

## अपराध प्रतिरूप का ग्रामीण जीवन पर प्रभाव

अपराधों का प्रभाव ग्रामीण जीवन के विभिन्न रुपो में है जो तालिका 1.3 मे दिखाई रहा है।अध्ययन से प्राप्त प्राथमिक आँकड़ों के अनुसार ग्रामीण विकास प्रभावित होने की प्रतिक्रिया सर्वाधिक 21 रही। इसके बाद दैनिक जीवन प्रभावित होने की 18 प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुईं।

कृषि एवं पशुपालन प्रभावित होने की 8 प्रतिक्रियाएँ तथा महिलाओं की आवाजाही प्रभावित होने की 7 प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुईं। आर्थिक नुकसान और सामाजिक संबंध प्रभावित होने की प्रतिक्रियाएँ 6-6 रहीं। भय एवं असुरक्षा की प्रतिक्रियाएँ 3 रहीं। रोजगार/व्यवसाय प्रभावित तथा बच्चों की गतिविधियाँ प्रभावित की प्रतिक्रियाएँ 2-2 रहीं।

**तालिका 1.3 अपराध प्रतिरूप का ग्रामीण जीवन पर प्रभाव**

| प्रभाव | उत्तरदाताओं की संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|
| आर्थिक नुकसान | 6 | 6% |
| रोजगार/व्यवसाय प्रभावित | 2 | 2% |
| कृषि/पशुपालन प्रभावित | 8 | 8% |
| भय एवं असुरक्षा बढ़ी | 3 | 3% |
| सामाजिक संबंध प्रभावित | 6 | 6% |
| महिलाओं की आवाजाही प्रभावित | 7 | 7% |
| बच्चों की गतिविधियाँ प्रभावित | 2 | 2% |
| दैनिक जीवन प्रभावित | 18 | 18% |
| ग्रामीण विकास प्रभावित | 21 | 21% |
| **कुल** | **73** | **73%** |

*स्रोत: क्षेत्रीय प्राथमिक* आँकड़ों के आधार पर

## परिणामों की भौगोलिक विश्लेषन

इस प्रकार अध्ययन से यह पता चलता है कि कृषि एवं पशुपालन 62 प्रतिशत उत्तरदाताओं की प्रमुख आजीविका है। इसलिए ग्रामीण क्षेत्र में अपराध का कृषि एवं पशुपालन पर प्रभाव विशेष महत्व रखता है।

भूमि एवं संपत्ति विवाद का अपेक्षाकृत अधिक उल्लेख इस बात की ओर इशारा करता है कि ग्रामीण क्षेत्र संसाधनों और संपत्ति से संबंधित विवाद सामाजिक तनाव का कारण बन सकते हैं।

नशे से संबंधित अपराधों का अधिक उल्लेख ग्रामीण सामाजिक वातावरण में नशे की समस्या से जोड कर देख सकते है। नशे से जुड़े अपराधों का प्रभाव परिवार, सामाजिक संबंध और युवाओं के व्यवहार पर भी पड़ सकता है।

महिलाओं की आवाजाही पर प्रभाव की 7 प्रतिक्रियाएँ यह संकेत देती हैं कि अपराध की धारणा ग्रामीण महिलाओं की गतिशीलता को प्रभावित कर सकती है। महिलाओं की सुरक्षित आवाजाही शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार एवं बाजार तक पहुँच के लिए आवश्यक है।

## अपराध एवं ग्रामीण विकास

ग्रामीण विकास केवल कृषि उत्पादन या आय में वृद्धि तक सीमित नहीं है। इसमें सामाजिक सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, गतिशीलता और सामुदायिक सहभागिता भी शामिल हैं।

सर्वेक्षण में 21 उत्तरदाताओं ने माना कि अपराध ग्रामीण विकास को प्रभावित करता है। यह अध्ययन का महत्वपूर्ण निष्कर्ष है। अपराध के कारण यदि ग्रामीणों में असुरक्षा बढ़ती है अथवा दैनिक गतिविधियाँ सीमित होती हैं, तो इसका अप्रत्यक्ष प्रभाव ग्रामीण विकास की प्रक्रिया पर पड़ सकता है।

## निष्कर्ष

इस पूरे अध्ययन से यहां पता चलता है कि सिरोही जिले में जो ग्रामीण क्षेत्र है उसमें अपराध प्रतिरूप का ग्रामीण जीवन पर विभिन्न प्रकार का प्रभाव दिखाई पड़ता है प्रमुख अपराधों में नशे से संबंधित अपराध सबसे अधिक बताए गए हैं इसके अलावा भूमि संपत्ति विवाद और चोरी विवाद भी महत्वपूर्ण है इसके साथ ही अपराधों के प्रभाव प्रभावों पर नजर डाला जाए तो ग्रामीण विकास तथा दैनिक जीवन लोगों का मुख रूप से प्रभावित पाए गए हैं

इस अध्ययन से यह पता चलता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में अपराध को केवल पुलिस व्यवस्था से ही नहीं जोड़ना चाहिए बल्कि उसकी नशा मुक्ति रोजगार सामाजिक जागरूकता और साथ ही समाज की सहभागिता तथा महिलाओं की सुरक्षा जैसे मुद्दों को भी जोड़कर देखना आवश्यक है ।

यद्यपि उत्तरदाताओं द्वारा यादृच्छिक नमूना अध्ययन क्षेत्र की ग्रामीण परिस्थितियों का प्रतिनिधित्व नमूना माना गया है फिर भी निष्कर्ष की व्याख्या नमूना आकार और अध्ययन क्षेत्र की सीमा को ध्यान में रखकर की गई है ।

## सुझाव

- नशे से संबंधित अपराधों को कम करने के लिए ग्राम स्थिर पर जागरूकता केंद्र खोले जाए ।
- भूमि एवं संपत्ति विवादों के समाधान हेतु लोगों में कानूनी जागरूकता एवं आपसी सामजस्य बढ़ाया जाए ।
- महिला एवं बच्चों को सुरक्षित वातावरण दिलवाने के लिए स्थानीय सुरक्षा को मजबूत करने की आवश्यकता है ।

- ग्रामीण क्षेत्रों में सामुदायिक पुलिसिंग को और अधिक मजबूत बनाने की जरूरत है ।
- ग्रामीण क्षेत्रों में युवाओं को रोजगार के लिए उसमें कौशल विकास को प्रभावी बनाया जाए ।

# सुचि


1. Donnermeyer, J. F. (Ed.). (2016). The Routledge International Handbook of Rural Criminology. Routledge.
2. Dutt, A. K., Wadhwa, V., Thakur, B., & Costa, F. J. (Eds.). (2012). Facets of Social Geography: International and Indian Perspectives. Cambridge University Press.
3. Kabiraj, P. (2023). Crime in India: a spatio-temporal analysis. GeoJournal, 88, 1283–1304. https://doi.org/10.1007/s10708-022-10684-7
4. National Crime Records Bureau (NCRB). (various years). Crime in India. Ministry of Home Affairs, Government of India, New Delhi.
5. Singh, T. (2023). Factors Affecting Crime Related to Geography and Terrain in Karauli and Dholpur Districts of Rajasthan. International Journal of Research Publication and Reviews.

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

RESEARCH GATEWAY

AROGYAM ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

**भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध**

**ISSN 2321 – 9726**

**WWW.BHARTIYASHODH.COM**

**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY**

**ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)**

**WWW.IRJMST.COM**

**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE**

**ISSN 2319 – 9202**

**WWW.CASIRJ.COM**

**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES**

**ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)**

**WWW.IRJMSH.COM**

**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY**

**ISSN 2454-3195 (online)**

**WWW.RJSET.COM**

**INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION**

**ISSN 2582-5445**

**WWW.IRJMSI.COM**

**JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH**

**WWW.JLPER.COM**